



अमृत ग्राम विकास का बनकुचिया में स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

प्रभात मंत्र संवाददाता

पटमदा : अमृत ग्राम विकास संस्था द्वारा रविवार को पटमदा के बनकुचिया मध्य विद्यालय परिसर में आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में कुल 185 ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच कर उड़े मुफ्त में दवायों का वितरण किया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के मुख्या गुरुवरण हन्द्रम व ग्राम प्रधान समाज महतों ने संयुक्त रूप से द्विप्रज्ञवित का कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से अमृत ग्राम विकास के कोषाध्यक्ष विशाल महतों, संरक्षक अधिकारी द्वारा दिये। सन्निवार से अस्पताल में शुरू हुई प्राप्तवाहिका की सुविधा उपयोग के खुशी जाहर करते हुए कहा कि बहुत कम समय में स्वास्थ्य सुविधाओं को बहाल किया गया है इसके लिए सिविल सर्जन और बीड़ीओं तथा संचालक के साथ साथ सभी प्रतिनियुक्त चिकित्सक व कर्मी

अग्नि पीड़ित दुकानदारों से मिले पुरुद्दें



गम्फरिया(प्रभात मंत्र संवाददाता) : गम्फरिया के अग्नि पीड़ित दुकानदारों से रविवार दोपहर में नगर पर्षद के पूर्व उपाध्यक्ष पुरेंद्र नरगण मिलने पहुंचे और हालात का जायज लेकर उड़े ढांड बंधते हुए दुन्ह की घड़ी में हस्तभव सहायता का आश्वासन दिया। इस दौरान उड़ाने वाला मौजूद स्थानीय पांचांद मिलनाथ सिंह के अग्नि पीड़ित दुकानदारों के क्षतिग्रस्त हृष्ट सामर्थी की सूची तैयार करने को कहा। पुरेंद्र न कहा कि वे सामाजिक कारोगर से मुआवजा दिलाने का प्रयास करें। उड़ोने वाला किंतु जरूरत पड़ी तो वे दुकानदारों की समस्याओं को लेकर डीसी से भी मिलें।

झारखण्ड मजदूर यूनियन ने बीको मोड़ में खोला पनशता



गम्फरिया(प्रभात मंत्र संवाददाता) : झारखण्ड मजदूर यूनियन की ओर से औद्योगिक क्षेत्र गम्फरिया के बीको मोड़ में रविवार का पनशता खोला गया। इस पनशता का उद्घाटन यूनियन के अध्यक्ष सुनील गोई ने विधिवत फैटी काटकर किया। इस मौके पर उड़ोने वाला कि यह पनशता प्रांतिक इस भीषण पांचांद और चिलचिला थीप में औद्योगिक क्षेत्र की विधिवत कपनियों में ड्यूटी करने वाले मजदूरों एवं अम राहगों का यास बुझाने में उत्तरोगी साकेत होगा। इस मौके पर गोईरों के बीच चना व गुड़ का वितरण किया गया। इस मौके पर यूनियन के महासचिव सत्तर सिंह सरदार, उम्रें समाज, प्रफुल्ल महतो, सुखदेव कुहार, राज महतो, रवि सरदार, नरेंद्र लोहार, मुकेश महतो, मनोज मुण्डा आदि उपस्थित थे।

भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय साकची में ग्रैंड कैंप फायर का आयोजन

जमशेदपुर(प्रभात मंत्र संवाददाता) : भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय अम बाला साकची में पांच दिवसीय शिविर के चौथे दिन संचाय में ग्रैंड कैंप फायर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जमशेदपुर के सीनियर एप्सो ब्रांज राजन, विश्व अतिथि कोलहान के पूर्व डीआईजी राजीव रंजन, काग्रेस के पूर्व विधायक अरविंद सिंह के भाऊजे अकुर सिंह और अन्य अतिथियों ने रात्रि तक उपचार, आयोजन करके उपचार करने का आदेश दिया। उपचार, आयोजन, अनुमान लगाना, आग जलाना, कपास भोजन, पकाना, नोटिंग, लेसिंग इत्यादि विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त की। विभिन्न विद्यालय के बच्चों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी। तीन दिन से चल रहे शिविर में बच्चों ने रिपोर्ट में रहकर प्राप्तिक उपचार, आयोजन, अनुमान लगाना, आग जलाना, कपास भोजन, पकाना, नोटिंग, लेसिंग इत्यादि विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त की। विभिन्न विद्यालय के बच्चों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में डीबीएसएस कदमा, चिम्पाया विद्यालय सातवां पार्क, सेंट्रल पार्किंग स्कूल, कार्नेट स्कूल, ए डी एल सान बार, एन्पी स्कूल सातवां पार्क के लाभाग बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम को नियमित नियमित नारायण, धोरंज रंजन, पूजा, सुप्त, असिका, ध्वन शेखर, सुरु एवं अन्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

बिट्टपुर गुरुद्वारा में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

प्रभात मंत्र संवाददाता

जमशेदपुर : नाम्या स्माइल फाउंडेशन, गुरुद्वारा साहिं जी यातन तथा फोर्टिस अस्पताल कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर जी यातन बिट्टपुर स्थित गुरुद्वारा में आयोजित किया गया। इसमें नाम्या स्माइल फाउंडेशन के संस्थापक कुण्ठल शांघी, प्रधान जी-यातन गुरुद्वारा बिट्टपुर प्रकाश सिंह (पपी), त्रिलोक सिंह, जनरल सेक्रेटरी जी यातन गुरुद्वारा बिट्टपुर, भगवान सिंह, प्रधान, स्ट्रेटल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, सीनियर प्रधान चंचल सिंह, उपस्थित रहे। इस स्वास्थ्य शिविर में 268 से ज्यादा लोगों ने जांच करवाया। शिविर की खासियत यह थी कि यह विशेष तौर पर फोर्टिस

उपयुक्त निशुल्क होल्डर के साथ की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, कषा

ग्रामीणों को बेहतर से बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मिले

प्रभात मंत्र संवाददाता

जमशेदपुर : उपयुक्त विजया जाधव ने सिविल सर्जन, बीड़ीओ युडाकांडा, बनमाकड़ी अस्पताल का संचालन कर रहे विकास भारती संस्था के प्रतिनिधि, एमओआईसी व बीपीएम बहरागोडा, दुमरिया, मुसाबनी व अन्य स्टेक होल्डर के साथ बैठक कर अस्पताल के बेहतर संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के मुख्या गुरुवरण हन्द्रम व ग्राम प्रधान समाज महतों ने संयुक्त रूप से द्विप्रज्ञवित का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया। इस दौरान 75 मरीजों की ईंसीजी जांच की गई। जबकि सभी लोगों की ब्लड शुरू की जांच भी की गई। शिविर का उद्घाटन बनकुचिया पंचायत के साथ बैठक कर अस्पताल के संचालन को लेकर जरूरी दिशा निर्देश दिये। सन्निवार से अस्पताल में मुख्य रूप से अस्पताल के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा दिया गया।

प्राकृतिक आपदाओं की जार से फसलों की तबाही को कुदरत का कहर या विधि का विधान मान कर खानोशी से सहन कर लेता है

किसानों की संवेदनाएं समझें सत्ताधीश

आमतार पर मशवरा दिया जाता है कि महन्त करने वालों की कभी हार नहीं होती। लेकिन यदि वास्तव में इनसान किसान की भूमिका में हो तो कष्ट व्युत्पन्न में महन्त भी शिक्षण का दंश झेलने वाले होंगे।



मुख्य मुद्दा किसान ही बनते हैं। कृषि अर्थतंत्र का बुनियार्दास स्तंभ अन्नदाता लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदाता का जिम्मेदारना किरदार भी अदा करता है। जम्मूरियत क्वालंडी पर पहुंचने का गस्ता खेत खलिहान व गांव क्वालंडी चापालों से होकर ही गुजरता है। चुनावी समर में किसान सियासी दलों की प्राथमिकता में शामिल हो जाते हैं। स्थोर हुआ जनाधार हासिल करने के लिए सत्ता का समीकरण कृषक समाज के ईर्द-गिर्द ही घूमता है। चुनावी मौसम में सियासी मैदान में ताल टोकेने वाले प्रतिनिधि भी खुद को किसान बताकर किसानों का रहनुमान बनने की पूरी कौशिश करते हैं। कई सियासी रहनुमानों किसानों का मसीहा बन कर किसानी से जुड़े मुद्दों को अपना सियासी एजेंडा बनाकर सत्ता की सीढ़ियां चढ़कर जम्मूरियत की पंचायतों में पहुंच गए। मगर इकतादार हासिल होने के बाद किसानों के मुद्दे सियासी दलों के एजेंडे से गायब हो जाते हैं। मशहूर ब्रिटिश अर्थशास्त्री 'थॉमस रार्ट माल्थस' ने स-1798 में अपने किताब 'प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन' के जरिए दुनिया के चेताया था कि अनाज उत्पादन की तुलना में यदि जनसंख्या अधिक होती तो बहुत से लोग भोजन की कमी से मरेंगे। जब आवादी खाद्य आपूर्ति से अधिक हो जाए तो खाद्यानन्द जनसंख्या में असंतुलन पैदा हो सकता है। माल्थस के शत प्रतिशत सही इस तर्क के भविष्य में परिणाम जो भी हों, मगर हमारे मेहनतकश किसानों ने भारत को खाद्यानन्द उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाकर 'माल्थुसियन सिङ्डांत' को काढ़ी है। भारत में निवास करने वाले विश्व की लगभग 18 प्रतिशत दूसरी सबसे बड़ी आवादी की

खाद्य-सूक्ष्मा प्रदान का जा रहा ह। सरकारी डुप्पुआ में करड़ान लोगों का अनाज सस्ते दामों पर मिल रहा है। स्कूलों में मिडडे मील योजना के तहत करोड़ों छात्रों को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। कई पटोसी देशों को अनाज भेजकर आवाम की मदद की जा रही है। देश के अनाज भंडारों में भंडारण क्षमता से अधिक अनाज मौजूद है। यदि देश के किसी हिस्से में भूखमरी या कृषिधण जैसे हालात हैं तो इसके लिए सियासी निजाम जिम्मेवार है। खाद्यान्न, फल-सब्जियां तथा दुग्ध उत्पादन में भारत को विश्व में दूसरे पायदान पर काबिज करके कृषक समाज ने अपनी काविलीयत का लोहांग पूरी दुनिया में मनवाया है। इन उपलब्धियों का श्रेय भले ही देश के सत्ताधीश लेते हैं, मगर खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन किसानों के संघर्ष का परिणाम है। अन्न संकट के मद्देनजर देश में सन् 1965 में 'भारतीय खाद्य निगम' तथा कृषि उपज के न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश के लिए 'कृषि लागत एवं मूल्य आयोग' भी वज्रूद में आया था, मगर किसानों को मैहनत के अनुरूप उपज का मूल्य नसीब नहीं होता। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए वर्तमान में लोगों का झुकाव आर्गेंनिक फूड की तरफ बढ़ रहा है। जैविक व प्राकृतिक खेती की वकालत भी जोरों पर हो रही है, मगर प्राकृतिक उत्पाद भी किसानों की मैहनत पर निर्भर करते हैं। भारत विश्व की पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शुमार कर चुका है। वेशक देश में शिक्षा, स्वास्थ्य व सैन्य क्षेत्रों में काफी उन्नति हुई है। भारत को खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने वाला कृषक वर्ग गुरुबत से जूझ कर भी देश के स्वाभिमान को कायम रखने के लिए कर्जदाता बनकर प्रयत्नशील है। मगर करोड़ों किसानों की आजीविका का साधन हमारे गांव का पुश्टीनी व्यवसाय कृषि क्षेत्र आजार्दी के सात दशकों बाद भी कई समस्याओं से ग्रसित होकर विकास की दौड़ी में पिछड़ा हुआ है। अतः देश के कृषि अर्थशास्त्र को अपने पसीने से मुन्नवर करने वाले किसानों के हितों की पैरवी के लिए सियासी निजर-ए-करम की जरूरत है। बहरहाल वेमैसम बरसात से नुकसान का आकलन करके मुआजवे का ऐलान होना चाहिए। कृषि अर्थतंत्र की मजबूत नींव किसानों की संवेदनाओं का सम्मान करना होगा ताकि युवा पीढ़ी का खेती की तरफ रुझान बढ़े।

व्यवस्था पारवतन के लिए काटघड़ सरकार

१६५ को आजादी मिलने के 8 माह बाद 15 अप्रैल 1948 को यह सुंदर पहाड़ी प्रदेश 30 छोटी-बड़ी पहाड़ों

को आजादी मिलने के 8 माह बाद 15 अप्रैल 1948 को यह सुंदर पहाड़ी प्रदेश 30 छोटी-बड़ी पहाड़ियां रियासतों के विलय के साथ केन्द्रस्थासित चीफ कमिशनर प्रोविन्स के रूप में अस्तित्व में आया था। प्रदेश को एक अलग राज्य के रूप में स्थापित करने का श्रेय तत्कालीन नेतृत्व साथ-साथ प्रजामण्डल आन्दोलन के नायकों आंदोलनकारियों और यहां की जागरूक जनता को जाता है। हिमाचल प्रदेश के गौरवमयी इतिहास में धारी गोलीकांड सुकेत सत्याग्रह, पझौता आन्दोलन का विशेष स्थान है। इस पावन अवसर पर मैं हिमाचल निर्माता तथा प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार तथा उन सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस प्रदेश का विशेष पहचान तथा अलग राज्य का दर्जा दिलवाने के लिए अथक प्रयास किए। हिमाचल प्रदेश को वीरभूमि के नाम से भी जाना जाता है। इस अवसर पर मैं प्रदेश के उन सभी बहादुर सैनिकों को ब्रह्मांजलि अर्पित करता हूं, जिन्होंने वह केलिए कुर्बानियां दी हैं। मैं कर्मठ व ईमानदार प्रदेशवासियों का भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने प्रदेश को देश-विदेश में खास पहचान दिलवाई है। 11 दिसम्बर, 2022 को हमारा सरकार ने कार्यभार सम्पाला। इसी के साथ प्रदेश जनकल्याण एवं व्यवस्था परिवर्तन के नए युग का सूत्रपाल है।

लाभ पाने के लिए वार्षिक आय सीमा दो लाख रुपये निधि की गई है। बेटियों को सम्पत्ति में समान अधिकार प्रदान की दिशा में सरकार ने निर्णायक कदम उठाया विधानसभा में हिमाचल प्रदेश भू-जोत अधिकतम राज्य अधिनियम 1972 में संखोधन विधेयक पारित किया गया था। अब लैगिंग असमानता को बढ़ावा देने वाले असंवेधात्मक खण्डों को हटाकर बेटियों को पैतृक सम्पत्ति के भू-स्वामियों में समान अधिकार सुनिश्चित किया गया है। यैन अपने से बच्चों का संरक्षण अधिनियम' (पॉक्सो) के प्रावधान बारे में मुख्यमन्त्री सुरक्षित बचपन अभियान के अन्तर्गत प्रदेशवासियों, विशेषकर बच्चों को जागरूक किया जाएगा। राज्य में नशे की समस्या से निपटने के लिए विशेष कार्यक्रम का गठन किया जा रहा है। प्रदेश की आवे-हवा और बपानी हमारे लिए वरदान है। पहली बार हम एक लक्ष्य ले चल रहे हैं। मार्च, 2026 तक इस प्रदेश को हरित ऊँझ के रूप में विकसित किया जाएगा। प्रदेश सरकार ने हाइड्रोजन एवं अमोनिया परियोजना के लिए समझौता भी किया है। इससे प्रदेश में 4,000 करोड़ रुपए से अधिक का निवाप होगा तथा 3500 से अधिक रोजगार के अवसर सुनित होंगे। प्रदेश में 6 ग्रीन कॉरिडोर व्योगित किए गए हैं, जहां इलेक्ट्रिक वाहनों के माध्यम से यातायात सुविधा प्रदान की जाएगी।

दर्शन दुनायास

बदलते वक्त में प्राकृतिक खेती की ज़रूरत

उत्पादन और मूल्य प्राप्ति में अनिश्चितता की बजाए से किसान उच्च लागत वाली कृषि के दुश्चक्र में फंस गया है। लगातार गिरता उत्पादन और फसलों में बढ़ती बीमारियां कृषि क्षेत्र की जटिलताओं को और बढ़ा रही हैं। इस स्थिति से किसानों को बाहर निकालने और उनके दीर्घकालिक कल्याण के लिए प्राकृतिक खेती की तरफ रुख करने से सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं। कृषि में बढ़ते रासायनिक खाद्यों और दवाओं के उपयोग से फसलों और फिर इसका सीधा प्रतिकूल प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। प्राकृतिक खेती एक रासायनिक खाद मुक्त यानी पारंपरिक कृषि पद्धति है। इसे कृषि-परिस्थितिकी आधारित विविध कृषि प्रणाली माना जाता है, जो जैव विविधता के साथ फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है। सरकार ने देश भर में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति यानी बीपेकेपी को प्रश्रय देकर राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की शुरूआत की है, ताकि किसान खेतों में रासायनिक खाद्यों का उपयोग कम कर सके। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत पंद्रह हजार कल्स्टर यानी समूह विकसित करके साढ़े सात लाख हेक्टेयर क्षेत्र को इसकी परिधि में लाया जाएगा। प्राकृतिक खेती शुरू करने के इच्छुक किसानों को कल्स्टर सदस्य के

अनृत फलरा

प्रकृति आर परमात्मा
नि परमात्मा में है लेकिन परमात्मा प्रकृति में

विरोधभासी, पैराडाक्सिकल सा दिखन वाला व
गहन है। इसके अर्थ को ठीक से समझ लेना उपयोगी है। कृष्ण कहते हैं, तम, तीनों गुणों से बनी जो प्रकृति है, वह मुझमें है, लेकिन मैं उसमें नहीं हूँ किएक बड़ा वर्तुल खींचें अपने मन में, एक बड़ा सर्किल। उसमें एक छोटा खींचें। तो छोटा वर्तुल तो बड़े वर्तुल में होगा, लेकिन बड़ा वर्तुल छोटे व होगा। प्रकृति तो हमें दिखाई पड़ती है कि असीम है, बहुत विराट; और—पता नहीं चलता; लेकिन परमात्मा के ख्याल से प्रकृति ना—कुछ है। वर्तुल है, बहुत सीमित घटना है। ऐसी अनंत प्रकृतिया परमात्मा म हो सकती है; बनती है, बिखर जाती है। परमात्मा के भीतर ही सब कुछ घटित होता यह ठीक है कहना, सब कुछ मुझमें है, लेकिन मैं उस सब कुछ में नहीं हूँ में नहीं होता, क्षुद्र तो विराट में होता ही है। लहर सागर में होती है, तो सागर है, सब लहरें मुझमें हैं, लेकिन मैं लहरों में नहीं हूँ। क्योंकि लहरें न रहें रहेगा, लेकिन सागर न रहे तो लहरें न बचेगी। हम सोच सकते हैं, सागर के लहरों के, लेकिन लहरों का होना नहीं सोच सकते बिना सागर के। लहरें उठती हैं, सागर में ही होती हैं, फिर भी इतनी छोटी हैं कि उस सागर में उठव को धेर नहीं पाती। धेर भी नहीं सकती है। इस वक्तव्य को देने के कुछ कासाधक के लिए बहुत अनिवार्य है। कृष्ण जब कहते हैं, यह सारी प्रकृति मैं भी मैं इस प्रकृति में नहीं हूँ, तो दो बातें ध्यान में रख लेने जैसी हैं। एक तो परमात्मा में प्रवेश कर जाए, उसमें प्रकृति होगी, लेकिन जो प्रकृति मैं हूँ उसमें परमात्मा नहीं होगा। जैसे कि कृष्ण को भी भूख लगती है, और कृष्ण आती है, और कृष्ण के भी पैर में चोट लगती है, तो दर्द और पीड़ा होती है

बोधकथा

निहारने की गुरुभवित

बात उस समय का है जब स्वामी विवेकानंद, स्वामी विवेकानंद नहा। बल्कि नरेंद्र दत्त थे और अपने गुरु के लिए नरेन थे। नरेन अपने गुरुदेव से मिलने रोजाना उनके पास दक्षिणश्वर आया करते थे। एक बार गुरुदेव रामकृष्ण ने नरेन से बात करना और उनकी ओर देखना भी बंद कर दिया। स्वामी विवेकानंद (नरेन) थोड़ी देर बैठे रहे, फिर गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को प्रणाम करके चले गए। जब अगले दिन आये तब फिर वही घटना घटी, फिर ऐसा कई दिनों तक चलता रहा। आखिर में रामकृष्ण परमहंस ने अपनी चुप्पी तोड़ी और स्वामी विवेकानंद से पूछा। जब मैं तुझसे बात ही नहीं करता था, तो तू क्या करने यहां आता रहा। उत्तर मैं स्वामी विवेकानंद बोले, 'महाराज आपको जो करना है आप जानें, मैं कोई आपसे बात करने ही थोड़ी आता हूँ...' मैं तो बस आपको देखने के लिए आता हूँ।' स्वामी विवेकानंद गुरु को दख-देख कर पूर्णता की ओर बढ़ गये। जीवन में जिसने गुरु को निहारने की कला सीख ली वह हमेशा आगे बढ़ता ही जाता है।

નાગારક બાધ

दुजन का सगत स सज्जन मा दुजन हा जाता ह
म दोनों के मल में एकत्रित होने से कर बैठता है। मनस्य का विशेष अहित उसके स्नेही जन ही करने के लिए अपने पिता आ

आम जारी करने का दूसरा नियम है। नीम के संसर्ग से आम भी नीमपन को प्राप्त करता है। दर्जन की संगत से प्रायः सज्जन भी दर्जन

करकरा ह दुर्जन क सज्जन स प्राप्तः सज्जन मा दुर्जन हा जाता है इस बात पर यदि थोड़ा विचार किया जाए तो प्रश्न यह उठता है कि दुर्जन का प्रभाव ही क्यों पड़ता है ? सज्जन का प्रभाव क्यों नहीं पड़ता ? आम ही कड़वा क्यों होता है ? नीम मीठा क्यों नहीं होता है जबकि दुर्जन कठोर अद्य का होता है सज्जन तो खरबूजे की भाँति है और दुर्जन खाकू की भाँति । खाकू चाहे खरबूजे पर पड़े या खरबूजा खाकू के ऊपर कटना तो खरबूजे को ही पड़ता है । इसलिए सज्जन का सदैव सज्जन होकर रहना चाहिए । मुख्य का शीताना अहिं दुर्मन नहीं करता, उतना उसका अविवेक का धम सवाल मुख करके उस विवेक विलास के गत म ड सकते हैं । वर्तमान युग मे देखा जा रहा है कि माता पिता अपनी संतान को धनवान बनाने की भावना तो रखते हैं मगर धर्मवान बनाने की और उनका ध्यान नहीं रहता वे अपनी संतान को सुसंकारित करने की और ध्यान नहीं दे पाते । जिनमे स्वयं संस्कारों का अभाव होता है भला दुसरों को संस्कारित कैसे कर सकते हैं । माफिं की संतान शूटर बन जाती है तो कसरवार उनकी संतान कैसे हो सकती है । माता पिता संस्कारित हैं तो वे अपनी संतान पर हर क्षण ध्यान देते हैं । उमेशपाल की ही

जरन का लाल जनन। यह जलक जहां उनी बहुत असद को उकसाया था। बैठे के मौत की खबर सुनकर अंतीक फुट फुट कर रोया। उसने ही उमेशपाल की हत्या के लिए कहा था वो मानता है कि अपने बैठे की मौत जिम्मेदार भी वो खुद है। संतानों को महान बनाना हमारा हाथ में है। वर्तमान युग में बुराइयों को प्रभाव कुछ विशेष दृष्टिगोचर हो रहा है। अंतीक अहमद का पिस्टल पकड़ाने वाला खुद अपना पिता ही था। माफिया वे नवशोकदम पर चल कर उसका जीवन ही चौपट कर दिया। यह संस्कारों की फलश्रुति है। उसने यह नहीं सोचा था कि बुरा कार्य का बुरा नतीजा है। जो वो जेल की काले कोठरी में रहकर भोग रहा था।

